

पाठक-पीठिका

आपके पत्र प्यारे-प्यारे : आपकी भावनाओं के हरकारे

प्रधान सम्पादक

आपसे मिले पत्र

रोचक जानकारी से भरपूर

‘रेल दर्पण’ का ताजा अंक प्राप्त हुआ। उत्कृष्ट सम्पादन, सुचारु चयन, आकर्षक पृष्ठ सजावट और संग्रहणीय आलेखों से परिपूर्ण अंक को पढ़कर भारतीय रेल के बारे में काफी रोचक जानकारियाँ मिली हैं।

मैं ‘रेल दर्पण’ के प्रधान सम्पादक श्री शरत चंद्रायन व उनकी समस्त सम्पादकीय टीम को ‘रेल दर्पण’ के अनवरत 12 वर्षों से हो रहे प्रकाशन के लिए बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ कि भविष्य में भी ‘रेल दर्पण’ का इसी तरह दर्जेदार प्रकाशन होता रहे, जो रेल पत्रकारिता करने वाले पत्रकारों के लिए मार्गदर्शिका साबित होती रह।

संजय राऊत, सम्पादक, दैनिक सामना, मुंबई

उत्कृष्टता के नये प्रतिमान तय करती पत्रिका

‘रेल दर्पण’ का मार्च, 2012 का अंक पढ़कर एक बार फिर मन पुलकित हो गया। पश्चिम रेलवे के डीसी ईएमयू की विदाई का कवर (अलविदा, डीसी ईएमयू ट्रेन) देख कर ही मन भर आया था। भीतर पूरी जानकारी का विस्तार पढ़कर तो और भावुक हो उठा। युगों तक साथ देने वाली तकनीक को अलविदा कहना, आसान तो नहीं है, मगर यही जीवन है। तरक्की के रास्ते पर आगे बढ़ने के लिए एक बेहद मुश्किल लेकिन भावुक फैसला !

‘विविधा’ में पश्चिम रेलवे के प्रमुख रेल कारखानों और शेडों के बारे में जानकारी बहुत ज्ञानवर्द्धक थी। भारत को जोड़ने में रेलवे की भूमिका तो दुनिया जानती

है, लेकिन ‘विविधा’ में ही भारतीय भाषाओं को जोड़ने में भारतीय रेलवे की भूमिका के बारे में जानना बहुत रोचक लगा। मध्य पृष्ठों पर 2012 के कैलेण्डर की सौगात भी मन को खूब भायी। ‘काव्यात्मक अभिव्यक्ति’ का तो बस क्या कहना ? इन कविताओं से पता चला कि ‘लोहे के घोड़े’ और ‘मशीनों के साथ काम करने वाले’ कर्मचारियों का दिल दरअसल कितना कोमल है ? ‘स्वास्थ्य चर्चा’ में नीम के गुणों का विस्तार से बखान बेहद उपयोगी था, तो ‘सामयिक गतिविधियाँ’ में पश्चिम रेलवे की सम-सामयिक उपलब्धियों की बढ़िया जानकारी मिली। ‘व्यंग्य वीथिका’ की गुदगुदाती चुटकियों से मुस्कराए बिना नहीं रहा गया। इस खंड में श्री आश करण अटल जी ने फिल्मी दुनिया के चरित्रों की जो व्याख्या की, वह बेहद मनोरंजक थी। दूसरी तरफ जापान के दफ्तरों में बॉस पर गुस्सा निकालने की व्यवस्था का बखान भी कम रोचक नहीं था। ऐसे जानकारी भरे, लेकिन अलहदा नजरिये से दुनिया को बेहतर समझने में आसानी होती है। ‘कथा-कुंज’ में कहानी ‘स्टेशन मास्टर की डायरी’ ने एक स्टेशन मास्टर के जीवन की कशमकश को सचमुच कागज पर उकेर कर रख दिया। फिल्म अभिनेता श्री विनय पाठक से साक्षात्कार भी नये दृष्टिकोण सिखाने वाला था, तो आखिरी पन्ने पर श्री शैलेश लोढ़ा की कविताएँ भी बेजोड़ थीं।

कम शब्दों में कहना ये है कि ‘रेल-दर्पण’ दिनों-दिन श्रेष्ठ से सर्वश्रेष्ठ होती जा रही है। अपने हर अंक के

साथ ये और अधिक उमदा हो रही है। भविष्य में इसकी लगातार तरक्की के लिए हमारी शुभकामनाएँ....!

पी.के.विश्ववास,

प्रबंध निदेशक, रनैपर्स एडवर्टाइजिंग एजेंसी, मुंबई

‘RAIL DARPAN’ IS TRULY A GEM !

Thank you for sending us the latest issue of ‘Rail Darpan’. The magazine is truly a gem from western Railway and a tribute to our Rashtra Bhasha – Hindi. This issue is too packed with interesting articles, that we are amazed as how you and your team manages to compile so much data in such a interesting way. We feel that with each new issue your team out does itself and deserves every appreciation and accolade it receives. This Issue of ‘Rail Darpan’ gives the common person a very comprehensive picture of the progress of the Railways in general and DC to AC conversion in particular. Right from the cover to the ‘Special Feature’, the contents keeps the reader engrossed leaving no room for boredom. The designs and the layouts too are excellent. We congratulate the Editorial team and wish them great success for every new issue.

Subhag Zaveri,

Managing Director,
Apex Advertising, Mumbai

अखबारों में प्रकाशित समीक्षाएँ

हमारा महानगर,
मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

हर मायने में अनूठी 'रेल दर्पण'

'रेल दर्पण' का मार्च 2012 का अंक पश्चिम रेलवे की सम-सामयिक गतिविधियों के साथ-साथ तमाम जन-उपयोगी सूचनाओं का खजाना है, जिसमें पश्चिम रेलवे के हर क्रियाकलाप का सटीक विवरण और नई सेवाओं की जानकारी है। 'विशेष अतिथि रचनाकार' के पन्ने पर इस बार श्री शैलेश लोढ़ा की कविताएँ पश्चिम रेलवे की हिंदी साहित्य के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं। स्टेशन मास्टर की डायरी, व्यंग्य वीथिका, पाठक मंच, विविधा आदि स्तम्भों ने रेलकर्मियों में छिपी प्रतिभाओं को उभारने के साथ-साथ उनके अनुभवों को बाँटने के लिए एक समुचित प्लेटफॉर्म भी मुहैया कराया है। विशेष सौगात रूपी कैलेण्डर और उसमें अनमोल सूक्तियाँ अपने आप में अनूठी हैं। कविता, स्वास्थ्य के विविध पहलुओं पर चर्चा, पश्चिम रेलवे के अतीत से सम्बंधित लेख, विभिन्न मंडलों की गतिविधियाँ आदि को काफी रोचक तरीके से पेश किया गया है। हिंदी साहित्य की शायद ही कोई ऐसी विधा है, जिसके दर्शन इस पत्रिका में न होते हों।

पत्रिका में अंग्रेजी के भी कुछ अध्याय जोड़ने से उस वर्ग के पाठक को भी पश्चिम रेलवे के स्पर्णित अतीत, शानदार वर्तमान और बेहतरीन भविष्य की झलकियाँ मिलती है। इस बार जॉन पिट कॅनेडी की गाथा, श्री विनय पाठक से बातचीत आदि काफी ज्ञानवर्द्धक है।

संक्षेप में पश्चिम रेलवे का 'रेल दर्पण' नामक यह आईना हमें लगातार पश्चिम रेलवे की विविध गतिविधियों से रू-ब-रू कराता है। यह पश्चिम रेलवे के इतिहास, उसके आधुनिकीकरण और उसकी भावी योजनाओं से परिचित कराता है और 'राष्ट्रभाषा हिंदी' की अतुलनीय सेवा करता है। इस बार का अंक 'डी सी ई एम यू ट्रेन की विदाई' को समर्पित था। हमें विश्वास है कि अगला अंक पश्चिम रेलवे की किसी और सफलता की मुनादी करेगा।

अर्चना कंथारिया, वरिष्ठ पत्रकार

जागरूक टाइम्स,
मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

समय के साथ कदमताल करती 'रेल दर्पण'

प्रौद्योगिकी और समाज के विकास की प्रक्रिया के बीच होने वाले मानवीय व्यवहारों को समझने की प्रतिबद्धता पश्चिम रेलवे की गृह-पत्रिका 'रेल दर्पण' के मार्च 2012 अंक में दिख रही है। इसकी स्पष्ट झलक वर्ष 2012 के कैलेण्डर में रेल और यात्री से सम्बंधित छाया-चित्रों और संदर्भित दोहावली में मिलती है। 'डी सी ई एम यू विद्युत कर्षण की विदाई' यात्रा को दर्शाते आवरण पृष्ठ

वाली पत्रिका में 'सामयिक गतिविधियों' के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों के आकर्षक चित्रों के साथ विस्तार से जानकारी देते विवरण और नये स्तम्भ 'प्रदर्शनी की झलक : आइये निहारें अपलक' में काव्यमय लहजे में प्रदर्शित दुर्लभ चित्रों के समावेश से पत्रिका संग्रहणीय बन गई है। 'विविधा' में औद्योगिक प्रगति के संवाहक 'पश्चिम रेलवे के प्रमुख कारखाने एवं शेड' एक जानकारीप्रद लेख है। 'व्यंग्य वीथिका' में सुप्रसिद्ध कवि श्री आश करण अटल का फिल्मी दुनिया के स्थायी पात्र विषयक व्यंग्य गुदगुदाता है। वहीं 'दास्तान-ए-बॉस' एक आकर्षक और वास्तविकता दिखाता व्यंग्य है। 'कथा कुंज' में सुश्री उषा प्रियंवदा की कहानी 'स्टेशन मास्टर की डायरी' में मध्यमवर्गीय परिवार के निष्कपट, मूल्यवान, जिम्मेदार अभिभावक की छवि तथा उसके प्रति परिवार के अन्य सदस्यों के निंदनीय व्यवहार का बड़ा ही करुण एवं मर्मस्पर्शी चित्रण किया गया है। इसके साथ ही कहानी 'हम बेटियाँ हैं ना' समाज में लड़के और लड़की के बीच किये जाने वाले भेदभाव को दिखाती है। इसके अलावा 'सांस्कृतिक हलचल' में पश्चिम रेलवे के सांस्कृतिक संगठन के कार्यक्रमों की जानकारी मिलती है। 'जिन्दादिली और उल्लास के हरकारे' में रेलकर्मियों में अवसाद पर अनुसंधान करने वाले डॉ. असीम मजुमदार की प्रतिभा और 'पुस्तक समीक्षा' में संतोष सुपेकर के काव्य संग्रह 'चेहरों के आर-पार' से परिचित कराया गया है। हमेशा की तरह 'काव्यात्मक अभिव्यक्ति' में पश्चिम रेलवे के विभिन्न मंडलों में कार्यरत रेल कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को एक सशक्त मंच प्रदान किया गया है। इसी खण्ड में मध्य रेल, पुणे के जनसम्पर्क अधिकारी श्री वार्ड.के. सिंह की रचना 'पत्थर' में विभिन्न प्रसंगों में अपनी उपयोगिता को सिद्ध करते पत्थर की सार्थक अभिव्यक्ति मिलती है। 'स्वास्थ्य चर्चा' में भारत में सर्वसुलभ वृक्ष नीम के गुणों की जानकारी दी गई है। पत्रिका 'मंडलों के अंचलों से' स्तम्भ के अंतर्गत विभिन्न मंडलों के आयोजनों का सचित्र वर्णन कर सभी मंडलों की भागीदारी का सुखद अहसास कराती है। 'सखियों का संसार' कॉलम के माध्यम से पत्रिका में महिला जगत को भी प्रमुखता से स्थान दिया गया है। 'तस्वीरें बोलती हैं' एक शानदार संग्रह की बेहतरीन प्रस्तुति है।

अंग्रेजी खंड में ऑफ बीट सिनेमा के अभिनेता श्री विनय पाठक के रेलवे से जुड़े साक्षात्कार में रेलवे को साफ-सुथरा रखने का संदेश मिलता है, तो 'विशेष अतिथि रचनाकार' में युवा कवि अभिनेता श्री शैलेश लोढ़ा की रचनाएँ बुनियादी जरूरतों से जूझते अल्प कमाई वालों की बेचारगी पर प्रकाश डालती है। पत्रिका का चित्रण एवं मुद्रण भी बेहद आकर्षक है, जो इसे और उत्कृष्ट बनाता है।

अजीत राय, संस्करण सम्पादक, मुंबई

प्रातःकाल,
मुंबई में प्रकाशित समीक्षा

निरंतर नये प्रतिमान गढ़ती 'रेल दर्पण'

पश्चिम रेलवे की गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' अंक दर अंक नये प्रयोगों से प्रस्तुतीकरण में निरंतर नये प्रतिमान स्थापित कर रही है। पत्रिका के मार्च, 2012 अंक की पठनीय सामग्री की रोचकता पाठकों को नये अहसासों और नई जानकारीयों से अवगत कराती है, तो संकलित चित्रों की मोहकता पत्रिका को पढ़ने से पहले देखने को विवश करती है। पत्रिका में प्रकाशित वर्ष 2012 के कैलेण्डर में स्लोगन के साथ रेलवे से सम्बंधित विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते चित्र दिल को छू जाते हैं। 'सामयिक गतिविधियाँ' के अंतर्गत पश्चिम रेलवे के महत्वपूर्ण कार्यक्रम और पुरस्कारों के सचित्र विवरण पश्चिम रेलवे की उपलब्धियों की जानकारी देने के साथ कुशल संयोजन की बानगी पेश करते हैं। पत्रिका का नया स्तम्भ 'प्रदर्शनी की झलक : आइये, निहारें अपलक' कोई म्यूजियम देखने का आभास कराता है। 'विविधा' के अंतर्गत पश्चिम रेलवे के प्रमुख कारखानों एवं शेडों की सारगर्भित जानकारी दी गई है। 'व्यंग्य-वीथिका' में आश करण अटल की फिल्मों की घिसी-पिटी शैली के बीच फिल्मी पात्रों और रवीन्द्र कुमार की बॉस को परिभाषित करती चुटकी पाठकों को गुदगुदाती है। 'कथा-कुंज' में उषा प्रियंवदा की कहानी 'स्टेशन मास्टर की डायरी' निरंकुशता की इच्छुक असंवेदनशील युवा पीढ़ी और पत्नी एवं बच्चों द्वारा खुद को केवल धनोपार्जन का निमित्त समझने की एक अभिभावक की पीड़ा का सटीक चित्रण है। अंग्रेजी खंड के 'इंटरव्यू' में विनय पाठक और 'विशेष अतिथि रचनाकार' में शैलेश लोढ़ा जैसे युवाओं का चुनाव सम्पादक का सराहनीय प्रयास है।

अश्विनी राय, वरिष्ठ पत्रकार

राज एक्सप्रेस,
भोपाल में प्रकाशित समीक्षा

बहुआयामी है

'रेल दर्पण' का नया अंक

रेल परिवार से सीधे सम्बद्ध न होने के बावजूद एक रेल यात्री के रूप में जन सामान्य का रेलवे से एक रिश्ता जरूर रहता है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए पश्चिम रेलवे के जनसम्पर्क विभाग द्वारा विगत 12 वर्षों से प्रकाशित की जा रही अर्द्धवार्षिक पत्रिका 'रेल दर्पण' का मार्च-2012 अंक विशेष रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक स्वरूप में प्रस्तुत किया गया है। 'रेल दर्पण' को सिर्फ रेलवे परिधि में सीमित न रखते हुए इसके स्वरूप को बहुआयामी बनाने का प्रयास किया

गया है। पत्रिका में रेलवे की महत्वपूर्ण गतिविधियों एवं उपलब्धियों का सचित्र लेखा-जोखा तो दिया ही गया है, साथ ही रेल परिवार में विद्यमान रचनात्मक प्रतिभाओं की ऊर्जा एवं सृजन क्षमता का भी साहित्य की विभिन्न विधाओं में समावेश किया गया है। 'रेल दर्पण' में विशेष अतिथि रचनाकार स्तम्भ के अंतर्गत अब तक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त गीतकार सर्वश्री गुलज़ार, जावेद अख्तर, कैफ़ी आज़मी, शैल चतुर्वेदी, निंदा फाजली, हुल्लड़ मुरादाबादी, गोपालदास नीरज, श्याम ज्वालामुखी, शैलेन्द्र, माया गोविन्द, आशकरण अटल, अशोक चक्रधर, सूर्यभान गुप्त, मधुप पाण्डेय व शैलेश लोढ़ा की रचनाओं को खास तौर पर शामिल किया जा चुका है। 'रेल दर्पण' के आवरण पृष्ठ की बहुरंगीय साज़-सज्जा अद्भुत व आकर्षक है। पश्चिम रेलवे यात्रियों की सुखद यात्रा की पोषक है, जिसके द्वारा अपनी पत्रिका के माध्यम से रचनात्मक, ज्ञानवर्द्धक एवं उद्देश्यपरक सामग्री प्रस्तुत की जाती है, जिससे पाठकों का सही मायने में मार्गदर्शन किया जा सके। पत्रिका का कुशल सम्पादन प्रधान सम्पादक एवं मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी शरत चन्द्रायन द्वारा किया जाता है।

'रेल दर्पण' पत्रिका पश्चिम रेलवे की वेबसाइट www.wr.indianrailways.gov.in पर भी उपलब्ध है।

दैनिक पत्रिका, इन्दौर में प्रकाशित समीक्षा

विकास की परम्परा कायम

'रेल दर्पण' के नये अंक में अपने रेल कारखानों की जानकारी देकर पश्चिम रेलवे ने अपने तकनीकी विकास की परम्परा को पाठकों के बीच जीवित रखा है। इसमें पश्चिम रेलवे के अलग-अलग लोको शेडों की जानकारी भी दी गई है। भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार में रेलवे की भूमिका शीर्षक से प्रकाशित लेख सराहनीय है। मुबारक बेगम के सुरों से सजी शाम का जिक्र विस्तार से किया जा सकता था। उनके द्वारा पढ़े गये शेर प्रशंसकों के लिए संग्रहणीय हो सकते थे। गब्बर सिंह के चरित्र-चित्रण से यह साबित करने की कोशिश की गई है कि खलनायकों से भी समाज अच्छी सीख ले सकता है। लेख 'दास्तान ए बॉस'-नो कमेंट। कैलेण्डर का प्रकाशन संग्रहणीय है। 'काव्यात्मक अभिव्यक्ति' के माध्यम से कविता प्रेमियों और कविताकारों की परम्परा को आगे बढ़ने का सिलसिला इस बार भी जारी रहा, जो प्रशंसनीय है। 'सामयिक गतिविधियों' के तहत प्रकाशित पश्चिम रेलवे की अंतरंग समाचार श्रृंखला में यदि वहाँ उपस्थितजनों के चित्र भी प्रकाशित किये जायें, तो प्रत्येक अंक अधिक से अधिक संग्रहित किया जा सकेगा। वडोदरा के रेलवे स्टाफ कॉलेज के डायमंड जुबली फीचर को और अधिक जगह दी जानी चाहिये थी। इसमें चित्रों की श्रृंखला का प्रकाशन भी किया जाता, तो अंक की पठनीयता और बढ़ सकती थी।

दैनिक नवज्योति, अजमेर में प्रकाशित समीक्षा

उपलब्धियों का गर्वित संकलन

पश्चिम रेलवे की गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' का यह अंक मेहनतकश रेलकर्मियों के सकारात्मक प्रयासों के संग्रहण की बेहतर पुस्तिका दिखाई पड़ता है। पश्चिम रेलवे की उपलब्धियों और गौरवमयी इतिहास को तस्वीरों और लेखों के माध्यम से पुस्तिका में चित्रित और प्रदर्शित किया गया है। पूरे रेलवे स्टाफ के सामूहिक प्रयासों और कई रेलकर्मियों के रचनात्मक और सृजनात्मक पहलुओं का प्रकाशन पत्रिका को श्रेष्ठ पत्रिकाओं की पंक्ति में लाकर खड़ा करता है। अन्य अंकों की तरह पुस्तिका के इस अंक में भी महाप्रबंधक श्री महेश कुमार के शुभकामना संदेश में लेखकों और रेलकर्मियों के लेखों की हौसला-अफजाई की गई है। महाप्रबंधक के गणतंत्र दिवस पर संदेश में कामयाबी, ग्राहकों के प्रति वचनबद्धता और चुनौतियों के प्रति हौसला बखूबी वर्णित किया गया है। प्रधान सम्पादक और मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी शरत चन्द्रायन ने अपने सम्पादकीय में इस अंक के प्रमुख आकर्षणों को बेहद संजीदगी के साथ प्रस्तुत किया है। पुस्तिका में पठनीय सामग्री की उत्कृष्टता को बरकरार रखा गया है। अंक में मुख्य रूप से पश्चिम रेलवे की 84 वर्ष पुरानी डीसी विद्युत कर्षण प्रणाली के विदाई समारोह का यादगार चित्रण और चर्चगेट के रोचक छायाचित्रों का सराहनीय अध्याय शामिल है। इस अंक में नई पीढ़ी के रचनाकारों और चमकते सितारों में कवि श्री शैलेश लोढ़ा की रचनाओं और अभिनेता श्री विनय पाठक के साक्षात्कार के जरिये इन प्रतिभाओं को जानने का मौका मिला। मध्य पृष्ठों पर प्रकाशित वर्ष का आकर्षक कैलेंडर संजोकर रखने लायक है। रेलवे इतिहास के आजादी से पहले के कुछ स्पेशल फोटो पाठक को पुस्तिका से जोड़े रखने में सफल हुए हैं। अंग्रेजी खंड में खासकर जॉन पिट कैनेडी की रोचक जानकारी अद्भुत संकलन है। 'कथा-कुंज' में स्टेशन मास्टर की डायरी, 'व्यंग्य-वीथिका' में अटलजी की चुटकियाँ, 'काव्यात्मक अभिव्यक्ति' और 'विविधा' स्तम्भ में रेलवे की औद्योगिक प्रगति का लेख व लेखकीय प्रतिभाओं की रचनाएँ लुभाती हैं। 'स्वास्थ्य-चर्चा' और 'वैचारिकी' जैसे नियमित स्तम्भ सजगता और चिंतन के द्योतक हैं। 'सखियों का संसार' पश्चिम रेलवे परिवार की महिलाओं को भी संगठन की बुलंदियों में योगदान देने को प्रेरित करता है। पूरे अंक में दमदार इतिहास को गतिमान करने का दृढ़ संकल्प और विकास धारा में सबको जोड़ने का अनूठा प्रयास प्रधान सम्पादक श्री शरत चन्द्रायन और उनकी टीम द्वारा किया गया है। सम्पादक मंडल की ओर से नये अंक में रोचक, मनोरंजक और ज्ञानवर्द्धक सामग्री का समावेश करने के हरसम्भव प्रयास सुनिश्चित किये गये हैं। यह अंक भी पश्चिम रेलवे परिवार को प्रोत्साहित करने वाला और वैचारिक अभिव्यक्ति को निरंतरता देने वाला साबित हुआ है।

गुणेन्द्र शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार

गुजरात वैभव, अहमदाबाद में प्रकाशित समीक्षा रंग-बिरंगे पुष्पों का उपवन

आकर्षक मुद्रण से समलंकृत विभिन्न रंग-बिरंगे चित्रों से सुसज्जित 'रेल दर्पण' पत्रिका का मार्च, 2012 का अंक अत्यधिक रोचक, मनमोहक, पठनीय एवं संग्रहणीय है। निश्चय ही यह पत्रिका देश की सर्वाधिक प्रशंसित पत्रिकाओं में समाविष्ट करने योग्य है, क्योंकि इसने सम-सामयिक विषयों के साथ-साथ हिंदी की सेवा करने का भी महत्वपूर्ण बीड़ा उठा रखा है। सुंदर छपाई के साथ-साथ भाषा की शुद्धता एक ऐसी विशेषता है, जो बहुत दुर्लभ है। 'रेल दर्पण' में पश्चिम रेलवे की विभिन्न गतिविधियों का विस्तृत लेखा-जोखा तो है ही, साहित्यिक रचनाओं को भी बहुत सुन्दर तरीके से सजाया गया है। इनमें 'व्यंग्य-वीथिका', 'कथा-कुंज' आदि स्तम्भ दिल को छू जाते हैं। 'विविधा', 'स्वास्थ्य चर्चा', 'वैचारिकी' आदि स्तम्भों में सम्पादक मंडल ने गागर में सागर भरने की चेष्टा कर पाठकों के मन को तृप्त कर दिया है। 'काव्यात्मक अभिव्यक्ति' में विचारोत्तेजक भावों को गुम्फित कर मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा प्रदान करने का भी भरपूर प्रयास किया गया है। 'स्वास्थ्य चर्चा' में कड़वे नीम की मीठी बातें हमें नीम के गुणों एवं उपयोगिता के बारे में लाभप्रद जानकारी प्रदान करती हैं। यह हमारे दैनिक जीवन में बहुत उपयोगी साबित हो सकता है। पत्रिका का अंग्रेजी विभाग भी उपादेय है। 'खेल-खिलाड़ी' तथा 'सामयिक गतिविधियों' में पश्चिम रेलवे के विभिन्न आकर्षक चित्र प्रस्तुत किये गये हैं। इनसे पता लगता है कि पश्चिम रेलवे अपने कर्तव्य निर्वहन के साथ-साथ समाजोपयोगी तथा इतर विषयों में भी कितनी सजग है? एक आकर्षक, ज्ञानवर्द्धक, मनोरंजक एवं नयनरम्य पत्रिका प्रस्तुत करने के लिए सम्पादक मंडल भूरि-भरि साधुवाद का पात्र है।

'रेल दर्पण' पत्रिका सचमुच राष्ट्रीय पुरस्कार पाने के काबिल

'रेल दर्पण' को सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने के लिए समस्त सम्पादक मंडल को मेरी ओर से बधाई तथा शुभकामनाएँ। पत्रिका को देखने पर तथा प्रकाशित सामग्री के अवलोकन पर पुरस्कार पाने की योग्यता तथा इसकी गुणवत्ता में कोई शंका शेष नहीं रह जाती है। आकर्षक सज्जा, शब्दों का संयोजन, पठनीय सामग्री तथा सम्पूर्ण प्रस्तुतीकरण निःसंदेह पत्रिका को उच्चस्तरीय बनाते हैं। समूची सम्पादकीय टीम के परिश्रम और प्रतिबद्धता से ही पत्रिका पठनीय व दर्शनीय बनती है। सम्पादकीय स्वयं वस्तुनिष्ठ, सम्प्रेषणीय और इस पत्रिका का दर्पण है। पत्रिका निरंतर उत्कृष्टता व पठनीयता बनाये रखकर लगातार प्रकाशित होती रहे यही हमारी शुभकामना है।

विपिन जैन,

मंडल कोषाध्यक्ष, उत्तर रेलवे, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली